शहीद–ए–आजम भगत सिंह

''लिख रहा हूँ मैं अंजाम, जिसका कल आगाज आएगा
मेरे लहू का हर एक कतरा, इंकलाब लाएगा
मैं रहूँ या नहीं रहूँ पर, ये वादा है मेरा तुझसे
मेरे बाद वतन पर मरने वालों का सैलाब आएगा॥

देश के लिए मर मिटने वाले देशभक्तों में भगत सिंह
का नाम भुलाया नहीं जा सकता। देश के प्रति
उनका प्रेम, दीवानगी और मर मिटने का भाव,
उनके शेर–ओ–शायरी और कविताओं में जोश
भरने का काम करता है।
भगत सिंह का पूरा जीवन एक कविता के माध्यम से:–

आज़ादी का एक दीवाना नाम भगत सिंह लिखता था,
गाँव के बाकी सारे बच्चों जैसा ही तो दिखता था॥
सब गुड्डे–गुड़िया खेलते थे, उसको आज़ादी प्यारी थी,
भगत के दिल में इंकलाब की तभी हुई चिंगारी थी॥

उसकी आँखो के ही सामने जलियावाला बाग हुआ,
सांर्डस के आदेशों से ये कैसा फांग हुआ,
उस दबी हुई चिंगारी ने फिर जन्म दिया एक ज्वाला को,
क्रांतिकारी बना भगत सिंह त्याग प्रेम की माला को॥

सांर्डस को मारा, बलिदानों की कसम भगत सिंह ने खाई थी,
किए धमाके संसद में बहरो को गूँज सुनाई थी॥

भेजा जेल भगत सिंह को उल्टी गोरों की चाल हुई,
और पहली बपर 116 दिन की भुख हड़ताल हुई
वो अडा रहा की जिसने सपने इंकलाब के देखे थे,
उस मूछ की ताव के आगे घूटने अंग्रेज़ों ने टेके थे॥

वो दोषी सिद्ध हो रहे थे, और मौत का पंजा कसता था,
जज को देख के भगत सिंह दीवानों जैसा हँसता था॥

जो चाहा था भगत सिंह ने आखिर वो ही अंजाम हुआ,
तीनों को फांाी दी जाए फिर कोर्ट में यं ऐलान हुआ॥

माँ से मिलकर बोला बेबे मैं दूध का कर्ज चुकाऊँगा,
आज़ादी के हर एक दीवाने में नजर तुझे मैं आऊँगा॥

माँ से बोला तू मत रोना, ये धरती मेरी माता है,
रोए या गर्व करे माँ के तो कुद भी समझ नहीं आता है॥

23मार्च का वो दिन आया ये भूमण्डल भी डोल उठा,
जेल का हर एक कोना उस दिन रंग दे बसंती बोल उठा ॥

भगत सिंह की अमित शहादत नियती भाँप गई होगी,
जब चूमा होगा भगत सिंह ने रस्सी काँप गई होगी॥

पत्थर दिल वाले अंग्रेज़ों के दिल भी पिंघल गए होंगे,
जलादों की आँखों से भी आँसु निकल गए होंगे॥

देह छोड़ दी भगत सिंह ने बनके इबादत गूँज उठा,
देह छोड़ दी भगत सिंह ने बनके शहादत गूँज उठा,
इंकलाब के नारों से फिर सारा भारत गूँज उठा॥

23 साल का एक लड़का आज़ादी का दीवाना था,
शहिद–ए–आजम कहलाया वो बस तुम्हे यही बतलाना था॥
मान्या सिवाच
12वी (बी)
9466979619

ईश्वर और प्रकृति

देखो प्रकृति भी कह रही सूर्य को नमन,
देख रहे ये अद्भुत दृश्य आप और हम ।
कैसी निराली यह ईश्वर की व्यवस्था है,
पर मनुष्य कहां किसी के आगे झुकता है ।
वह तो रहता है अपने अहंकार में चूर,
इसीलिए तो हो जाता परमात्मा से दूर ।
प्रकृति जो सिखा रही उससे हम सीखें ।
अपने मूल स्वरुप को जाने उसमें दीखे ।
हम सब है उसी परमपिता की संतान,
समझे उसकी कृतियां पाएं आत्मज्ञान

नाम कनिष्क
रोल नं. 3
कक्षा 10 डी
मो. 9671992442

(माँ के हाथ का खाना)

माँ के हाथ से बना भोजन
होता है सबसे स्वादिष्ट
क्योंकि उसमें घुला रहता
निस्वार्थ प्रेम का मिष्ठ।

हो सकता मिल जाए बाहर
मिर्च मसाला बेहतर स्वाद
पर नहीं मिल सकता कहीं
उसमें मिला ममता का भाव।

माँ के भोजन को न ठुकराना
बड़े ही प्रेम से उसे तुम खाना
उसमें मिला अमृत तत्व पाना
भूख संग आत्मतृप्ति भी पाना।

नाम – समिक्षा चौहान
अनुक्रमांक – एक (1)
कक्षा – दसवी (अ)
पिता का नाम – सुरेंद्र सिंह

तू चल,
तू किस लिए हताश है,
तेरे वजूद की तो,
समय को भी तलाश है।

चरित्र जब पवित्र है,
तो क्युँ है ये दशा तेरी,
ये पापियों को हक नहीं,
कि ले परीक्षा तेरी।

जो तूझसे लिपटी बेड़ियाँ,
समझना वस्त्र तूँ,
इन बेड़ियों को पिघाल कर,
बना ले इनको शस्त्र तूँ।

जला कर भस्म कर उसे,
जो करुरता का जाल हो,
तू आरती की लौ नहीं,
तू क्रोध की मशाल है।

चूनर उड़ा के ध्वज बना,
गगन भी कपकपाएँ गा,
अगर तेरी चूनर गिरी,
तो एक भूकंप आएगा॥

Message for Life

Life is definitely not easy,
so for you, the only message.

I would like to share
Don't give up your passion,
Just because of some kind
of social discrimination or
whatever you are facing in
life.
Stick to your goals and
follow your passion and
definitely believe in yourself.

one day you will definitely
achieve your goals.

Name - Taniya
class - 12th 'Arts'

Choti si hai zindagi,
Har baat mei khush rho.
Jo chehra paas na ho,
Uski awaz mei khush rho.
Koi rutha ho aapse,
Uske andaaz mei khush rho.
Jo laut ke nahi aane wale,
Unki yaad mei khush rho.
Kal kisne dekha hai,
Apne aj mei khush rho.

छोटी सी है जिन्दगी,
हर बात मे खुश रहो।
जो चेहरा पास ना हो,
उसकी आवाज़ में खुश रहो।
कोई रुठा हो आपसे,
उसके अंदाज़ मे खुश रहो।
जो लौट के नहीं आने वाले,
उनकी याद में खुश रहो।
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहो।

JARA
12th B

Key of Success

Remember that you alone are responsible for your academic achievement. Your instructor is your guide and your classmates may help you to understand your assignmeny; however, you are responsible for your own success.
Rudraksh Pandit
XII Arts

"Education is the most
Powerful weapon which
you can use to change
the world."

Rudraksh Pandit
XII Arts
8199982692

Societical

Just speak yourself
No matter who you are
Where from you,
Your skin colour,
Your gender identity
Just speak yourself
Just speak yourself
Just be yourself

Diksha
12th (I)

What Would Matter ?

What would Matter in the end ?
sometimes I think,

The joyful days?
Or the feelings that were meant to sink?

The funny conversations?
Or all the silly fights?

The dark depth of ocean?
Or the sunshine at high heights?

All the sweet things?
Or the moment which were sore?

The accepted harmony?
Or the unwanted war?

In the end I think, four things would matter,
How gently you lived
How gently you loved

How you kept open the long locked doors.
And how beautifully you let go off things that are n't yours.

Jahanvi A. Sharma (Poet)
Chesta
12th B
8950502591

You Know?

There's much more to me than you know
I'm a campfire in a field of snow.

I'm the rain in the bright sunlight
I'm the resting peace in a chaotic fights.

I'm the drop of dew on a morning leaf.
And if your heart is stolen, of course I'm the thief.

I'm the dark edge under the spot light.
I'm the eoccitement in your ever fright.

I'm the determination in ever try.
I'm the sta in a starless sky.

I'm the warrior in a crowd
I'm the restlessness in your ever proud.

I'm the best among the good.
out of everyone lying I was the one who stood.

Because there's more to me than people know.
I'm all the archer, the arrow and the bow.

Jahanvi A. Sharma
Chesta
12th B
8950502591

Thought for School Magazine

Once you have been hurt, you learn what it is to hate.

But it you hurt another
You become hated and your
Shoulder, a sinse of quilt.

However, its because one understands
Pain such as that
That one become generous toward other.

Experiencing pain help us to grow up,
To matune and growing up means that
One become able to think ton one self
and make one's own decissions.

To know and to reflet upon pain,
and then to come up with one's
own answer.

Name - Nitin
Class - 11th (C)

Thought for the school Magazine
A person because 10 times more attrative.
Not by their looks but by their,
ask of kindness, love, Respect honesty and
loyality they show.

Name - Nitin
Class - 11th C

कविता

पढ़ते हम है, पढ़ाते वो है,
हम तो गिरते रहते है, संभालते वो है,
रास्ते पर चलते हम है, रास्ता दिखाते वो है,
हम तो सिर्फ बच्चे थे, हमे शिक्षा देकर विद्यार्थी बनाते वो है।

Payal Saini
11th G
8529470135

शहीद–ए–आजम भगत सिंह

''लिख रहा हूँ मैं अंजाम, जिसका कल आगाज आएगा
मेरे लहू का हर एक कतरा, इंकलाब लाएगा
मैं रहूँ या नहीं रहूँ पर, ये वादा है मेरा तुझसे
मेरे बाद वतन पर मरने वालों का सैलाब आएगा॥

देश के लिए मर मिटने वाले देशभक्तों में भगत सिंह
का नाम भुलाया नहीं जा सकता। देश के प्रति
उनका प्रेम, दीवानगी और मर मिटने का भाव,
उनके शेर–ओ–शायरी और कविताओं में जोश
भरने का काम करता है।
भगत सिंह का पूरा जीवन एक कविता के माध्यम से:–

आज़ादी का एक दीवाना नाम भगत सिंह लिखता था,
गाँव के बाकी सारे बच्चों जैसा ही तो दिखता था॥
सब गुड्डे–गुड़िया खेलते थे, उसको आज़ादी प्यारी थी,
भगत के दिल में इंकलाब की तभी हुई चिंगारी थी॥

उसकी आँखो के ही सामने जलियावाला बाग हुआ,
सांर्डस के आदेशों से ये कैसा फांग हुआ,
उस दबी हुई चिंगारी ने फिर जन्म दिया एक ज्वाला को,
क्रांतिकारी बना भगत सिंह त्याग प्रेम की माला को॥

सांर्डस को मारा, बलिदानों की कसम भगत सिंह ने खाई थी,
किए धमाके संसद में बहरो को गूँज सुनाई थी॥

भेजा जेल भगत सिंह को उल्टी गोरों की चाल हुई,
और पहली बपर 116 दिन की भुख हड़ताल हुई
वो अडा रहा की जिसने सपने इंकलाब के देखे थे,
उस मूछ की ताव के आगे घूटने अंग्रेज़ों ने टेके थे॥

वो दोषी सिद्ध हो रहे थे, और मौत का पंजा कसता था,
जज को देख के भगत सिंह दीवानों जैसा हँसता था॥

जो चाहा था भगत सिंह ने आखिर वो ही अंजाम हुआ,
तीनों को फांगी दी जाए फिर कोर्ट में यं ऐलान हुआ॥

माँ से मिलकर बोला बेबे मैं दूध का कर्ज चुकाऊँगा,
आज़ादी के हर एक दीवाने में नजर तुझे मैं आऊँगा॥

माँ से बोला तू मत रोना, ये धरती मेरी माता है,
रोए या गर्व करे माँ के तो कुद भी समझ नहीं आता है॥

23मार्च का वो दिन आया ये भूमण्डल भी डोल उठा,
जेल का हर एक कोना उस दिन रंग दे बसंती बोल उठा ॥

भगत सिंह की अमित शहादत नियती भाँप गई होगी,
जब चूमा होगा भगत सिंह ने रस्सी काँप गई होगी॥

पत्थर दिल वाले अंग्रेज़ों के दिल भी पिंघल गए होंगे,
जलादों की आँखों से भी आँसु निकल गए होंगे॥

देह छोड़ दी भगत सिंह ने बनके इबादत गूँज उठा,
देह छोड़ दी भगत सिंह ने बनके शहादत गूँज उठा,
इंकलाब के नारों से फिर सारा भारत गूँज उठा॥

23 साल का एक लड़का आज़ादी का दीवाना था,
शहिद–ए–आजम कहलाया वो बस तुम्हे यही बतलाना था॥

मान्या सिवाच
12वी (बी)
9466979619

जल सरंक्षणम्

जलम् जल स्थानगतिम्
सर्वथा एव रक्षणीयम्।

जन्तूनां सुख जीवनं हेतु
जलस्थ रक्षणम् नूनं भवतु।

निर्मल जलं संपादनीयम्
जल संरक्षणम् अनिवार्यम्।

अभोजनेन जीवितुम् भवेत्
विना जलं तु सर्व हि नश्येत्।

किंचित् जलमपि पीतम्।
दाहं कष्टं करोति दूरम्।

शुष्क तपनं हाहाकारः
जल संरक्षणम् परिहारकः॥

पूर्वांशी
12 डी
9416911661

लक्ष्य

एक ही लक्ष्य है मेरा
उस पर कदम बढ़ाना है
धीमी–धीमी चाल से एक दिन
मंजिल को छू आना है।

मेरे गुरु जन ने मुझे सिखाया है
डरने से कोई
कामयाब न हो पाया है

इसीलिए अपना एक लक्ष्य बनाओ
उसपर कामयाबी का झंड़ा लहराओं
तभी सफलता पाओगे
जब समय को स्वयम चलाओ गे।

नाम–सुहानी
कक्षा–11वी (जी)
मो. 9996176351

शायरी

(1) अंधेरे मे तीर चलाने को अंधविश्वासी कहते है।–2
उजाले मे तीर चलाने को निशानेबाजी कहते है।–2
जो दूसरे के भरोसे जीते है जिन्दगी,
उसी जिन्दगी को बदनामी कहती है।

(2) तलाबो मे ढूँढ़ने से मिलते नहीं मोती।
समुद्र की गहराई मे झांक कर देखो।
कितने कष्ट होते है जिन्दगी में
ज़रा जिन्दगी से हिसाब माँग के तो देखो।

Thought

अगर भूखे रहने से भगवान की कृपा
हमारे ऊपर बनी रहती है तो आज सबसे ज्यादा कृपा
सड़को के किनारे भिख मांगने वाले भूखे बच्चो और
बड़ो पर होती, क्योकि वो तीन–चार दिनों से भी
ज्यादा भूखे रहते हैं।

नाम अंशू
कक्षा 9 वी (E)
रोल. नं. 17
तिथि 6–05–2023
मो. 9838215235

शायरी

(1) माँ–बाप से बढ़कर कोई भगवान नहीं होता,
इजजत से बढ़कर कोई दान नहीं होता,
दोस्ती में कोई मुस्लमान नहीं होता।

चुटकुले:–

अध्यापक: बेटा मम्मी को अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

लड़का : मदर।

अध्यापक: बेटा चलो, अच्छा अब बताओ पिता को अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

लड़का : फादर।

अध्यापक: बेटा चाचा को अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

लड़का : चादर।

अध्यापक: अरे! नहीं चाचा को अंग्रेजी में अंकल कहते है। ये बताओ चाची को अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

लड़का : ऐन्टीना।

अध्यापक: अरे! नहीं चाची को अंग्रेजी में अंटी कहते है। अच्छा ये बताओ चाची के बच्चे को अंग्रेजी में क्या कहते हैं।

लड़का : ऐन्टीवायरस।

अध्यापक: अरे! नहीं बेवकूफ चाची के बच्चे को अंग्रेजी में कज़न कहते हैं।

नाम सुमित
कक्षा 9 वी (ई)
रोल. नं. 16
मो. 99922–52318

दहेज प्रथा

लानत है इस दहेज को हमारे समाज पर
गौर कीजिए इस रीति–रिवाज पर आज
मैं सुनाती हूँ, एक सच्ची कहानी
लखनऊ में थी एक बस्ती पुरानी
एक लड़के और लड़की का पिता मजदूर था।
बच्चो को छोड़ चला मजबूर था।
अब लड़की रहती भाई के पास थी
हर दम उसकी जिन्दगी इतनी उदास थी।
भाई ने सोचा बहन का रिश्ता मैं जोड़ दूँ।
बिन दहेज दिए उसकी जिन्दगी को एक नया मोड़ दूँ।
भाई ने कर दी बहन की सगाई
और बोला अब तु हुई पराई
आर्शिवाद पास है दहेज नहीं
सोने–चाँदी की अंगुठी और पाजेब नहीं
घर की गरीबी तुझसे छुपाई नहीं जाती
खाने के साथ सब्जी बनाई नहीं जाती
जो पास है सो लुटा दूँगा
आखिर वो दिन वो रात आ गई
घर पर बहन की बारात आ गई
जब दूल्हे के पिता ने दहेज माँगा तो बहन और
भाई पर मौत छा गई
दूल्हे ने बहुत समझाया पिता को मरने पर साथ
नहीं जाएगी ये माया
पर पिता ने अस्वीकार किया और
अंधेर हो गया भाई तो वहीं मर कर ढेर हो गया
बहन ने गाड़ी के नीचे सिर झुका दिया दुनिया
मे पैसे वालो को नीचा दिखा दिया
आखिर यही मेरा पैगाम है दुनिया में गरीबों
को जीना हराम है।

सानिया
12 वीं (बी)
8930890304

आज किस्मत से अपनी लड़ाई है–2
बाहर का नहीं दुश्मन कोई, कर्म गति ने हुरमत खोई
अब तो बस यही धुन समाई है, आज किस्मत.....

बेरोजगारी बहुत देश में है छाई,
देश की सारी अर्थव्यवस्था चरमराई,
ऊपर से कोरोना ने नींद उड़ाई है,
आज किस्मत.....

नए कानूनों से जैसे खुद गई खाई,
देश में हो रही खींचा खिंचाई,
मत भुलो हम सब भाई–भाई है,
आज किस्मत.....

अवसर, समीक्षा और दीक्षा एप चलाई,
सरकार ने नई शिक्षा नीति बनाई,
बच्चों की हो रही टैब से पढ़ाई है,
आज किस्मत.....

शिक्षा विभाग जैसा विभाग नहीं कोई,
शिक्षकों ने जिम्मेदारी हमेशा निभाई,
अरुण गोयल देवै अब शिक्षकों को बधाई है,
आज किस्मत .....

माता–पिता

कौन कहता है बंद किस्मत वालो की
कोई ताली नहीं होती
सूखे पेड़ो पर क्या कभी डाली नहीं होती
अरे जो झुक जाता है अपने माँ–बाप के पैरो में
उस इंसान की किस्मत कभी खाली नहीं होती।

नाम तानिया
कक्षा 12 वी

ਕਵਿਤਾ

ਮੇਰਾ ਸਾਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚੱ ਖੁਸਬੂ ਤੇਰੀ
ਘੁਲੀ ਸੀ ਜਦ ਯਾਰਾ ਵੇ,
ਓਸ ਤੋ ਵਧੱ ਕੇ ਅਜੱ ਤਕੱ ਮੈਨੂੰ
ਨਾ ਲਭਿਆ ਵਕਤ ਪਿਆਰਾ ਵੇ
ਤੂੰ ਆਇਆ ਮੇਰੀ ਜਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚੱ
ਲੱਖਾਂ ਕਾਲੇ ਖਿਆਲਾਂ ਦਾ ਪਰਛਾਵਾਂ ਵੇ,
ਤੇਰੇ ਪਿਆਰ ਦੀਆਂ ਕਿਰਨਾਂ ਮੈਨੂੰ
ਹੀਰੇ ਵਾਂਗ ਲਸ਼ਕਾਇਆ ਵੇ
ਤੂੰ ਛੜਕੇ ਸਾਰੇ ਨਾਤੇ ਆਪਣੇ
ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਜਦ ਆਇਆ ਸੀ,
ਕੁਰਬਾਨੀ ਆਪਣੀ ਦਾ ਅਹਿਸਾਨ ਤੂੰ
ਇਕੱ ਵਾਰ ਵੀ ਮੈਨੂੰ ਨਾ ਜਤਾਇਆ ਸੀ।
ਤੂੰ ਚੰਨ ਬਣਕੇ ਜਦ ਰਾਹ ਮੈਨੂੰ
ਹਨੇਇਆਂ ਵਿਚੱ ਦਿਖਾਇਆ ਸੀ
ਉਦੋ ਰਬੱ ਮੈ ਰੂਪ ਤੇਰੇ ਵਿਚੱ ਦਿਖਾਇਆ ਸੀ।

ਨਾਮ ਤਾਨਿਆ
ਜਮਾਤ 12ਵੀ (ਆਰਟਸ)

विद्यार्थी: सर जो हमारे साथ बुरे हैं उनके साथ हमें अच्छा रहना चाहिए या फिर बराबर रहना चाहिए।

अध्यापक: जो हमारे साथ बुरे हैं उनके साथ अगर बुरे हो तो उनमें और आप में फर्क नहीं रहेगा। अगर आप उनके साथ अच्छे होंगे वे आपको बेच कर खा जाऐंगे। उनसे दूर रहो।

नाम अमनदीप सिंह
कक्षा 9वी (E)
रोल. न. 19

2) मेहनत करना मत छोड़िए
कामयाबी एक दिन अपने आप दस्तक देगी।

3) ईमानदारी खरीदने के लिए दर–दर ठोकरें खानी पड़ेगी। अगर आप धोख धड़ी खरीदने जाऐ तो घर से बाहर निकलने की देर हैं।

4) जो आदमी आपकी बुराई करे उसे करने दीजिए। एक दिन वे ही आपकी तारीफ करेगा।

5) किसी चीज का अहंकार न ही गुरुर करना चाहिए। क्योकि तकदीर बदलते देर नहीं लगती।

चुटकुले

1) लड़का: पापा क्या मैं भगवान दिखता हूँ?
पापा: क्यूँ बेटा तुम्हें किसने कहा?
लड़का: मैं जहां भी जाता हूँ लोग कहते हैं
'हे भगवान! फिर से आ गया'।

2) पति बैठकर दारु पी रहा है।
पत्नी: सुनो जी आजवाईन ले आना
पति: क्या?
पत्नी: आजवाईन खाने वाली।

3) पत्नी: सुनते हो जी मेरे घुटने में दर्द है। मुझे पास वाले डॉक्टर पर ले चलो। उसने पहले भी घुटने की दवाई दी थी।
पति: वो जो मोड़ पर है?
पत्नी: हाँ।
पति: वह तो मेरा दोस्त है। वो पहले कबाड़ का काम करता था।

पति और पत्नी गोलगप्पे की रेड़ी पर
पत्नी: कितने गोलगप्पे खाने हैं।
पति: ना गिन खा लें
पत्नी: तुने मुझे नागिन कहा?
पति: अरे! नहीं मैंने कहां ना गिन खा ले।

नाम अमनदीप सिंह
कक्षा 9वी (E)
रोल. न. 19

शायरी

जिसने दिन रात खून बहाया वो बाबा है।
जिसने खुद को जलाया वो बाबा है।
माँ ने खिलाई बच्चों को प्यार से रोटियाँ।
जो रोटियाँ कमाकर लाया वो बाबा है।

नाम अमनदीप सिंह
कक्षा 9वी (E)
रोल. नं. 19
मो. 8826438388

॥भौर हुई॥

चहक उठा वातावरण,
दूर बजे जैसे शहनाई,
जागी अलसाई धरती,
उषा की लालिमा छाई॥

सुदूर पूर्व, अति अपूर्व,
रंगों का नजारा छाया,
कल कल कर बहता पानी,
चिड़ियों ने राग सुनाया॥

पत्तों पर शबनम के डेरे,
हीरों का आभास होता,
नित नित बढ़ती कोंपलें,
नित नया आगाज होता॥

प्रकृति हुई नव संचारित,
मध्यम फैल रहा प्रकाश,
कलरव करें विहग,
रजनी को मिला अवकाश॥

कहां निशा का घोर तम,
अब अधिक टिक पाएगा,
आलोक का श्वेत स्त्रोत,
जब उदय हो जाएगा॥

नव रंगों में नहाया आकाश,
जड़ प्रकृति कुछ मचलाई,
नासीर यह नभचर सारे,
दिनकर की करते अगुवाई॥

शांति को मिला नया सुर,
शुरु हुए नित्य व्यापार,
जागो प्यारे जागो अनुज,
सुबह हुई जागा संसार॥

संजू कुमार सरोए।

POEM FOR SCHOOL MAGAZINE

TITLE: SHOULD WE QUIT

When situations go wrong, as they sometimes will,

When the way we're trudging seems all uphill,

When the credits are low and debits are high,

And we want to smile but have to sigh,

When worries are pressing you down a bit,

Rest a little, if you must, but we'd not quit.

Life is miracle with its twists and turns,

As every one of us always learns,

And many a failure turns about,

When we might have won if we'd struck it out,

Don't give up although the speed seems slow,

We will succeed with a final blow.

Often the fighter may have given up,

When we might caught the victory cup,

And we learned much late, when the night slipped down,

How close we were near the golden crown.

Success is failure turned inside out,

The silver tint of clouds of doubt,

And we never can tell how close we are,

It may be near when it looks so far,

So stick to strive when we're hardest hit,

It's when things seem worst that we mustn't quit.